E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(3): 69-69
Received: 17-05-2021
Accepted: 19-06-2021

सुजाता चारण
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
सुजाता चारण
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

''कृषि एवं ग्रामीण विकास में शिक्षा की भूमिका''

सुजाता चारण

सारांश
शिक्षा समाज का दर्पण है। यह मनुष्य को अज्ञानता से आत्मज्ञान में बदल देता है। 1964 में यूनेस्को के सम्मेलन ने माना की ''अशिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक गंभीर बाधा है।'' भारत की ज्यादातर आबादी गाँवो में बसती है और इनकी आजीविका का मुख्य स्त्रोत कृषि है। शिक्षा कृषि एवं ग्रामीण विकास दोनो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में आज भी लगभग आधे गाँवो की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति बेहद कमजोर है। यहां पर शिक्षा की अगर बात करे तो 'शिक्षा की वार्षिक रिपोर्ट' नाम के सर्वे से पता चलता है कि भले ही ग्रामीण छात्रों के स्कूल जाने की संख्या बढ़ रही हो पर इनमें से आधे से ज्यादा छात्र दूसरी कक्षा तक की किताब पढ़ने में असमर्थ है। अर्थात यहां पर ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना जरूरी है। उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और ओडिसा और भी अन्य राज्यों के प्रत्येक गाँव में आज भी स्कूल नहीं है। इसके चलते माता–पिता बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते है जिससे भी ग्रामीण शिक्षा विफल रही है। ग्रामीण विकास आमतौर पर अपेक्षाकृत पृथक और कम आबादी वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगो के जीवन की गुणवत्ता और आर्थिक कल्याण में सुधार की प्रकियां को संदर्भित करता है। ग्रामीण विकास में आधारभूत सुविधाएं जैसे स्कूल, स्वास्थ्य सुविधाएं, सड़क, पेयजल, विद्युतीकरण आदि सम्मिलित है। जिसमें शिक्षा भी एक है जिससे गांवो के लोग इन सब सुविधाओं के प्रति जागरूक होंगे। आजादी के बाद देश के कृषि परिदृश्य में भी काफी बदलाव आये है। चाहे वह उत्पादकता हो या फिर कृषि सम्बन्धित उच्च शिक्षण के अवसर। कृषि विकास की बात करे तो इसमें कृषि उत्पादकता बढ़ाना, लघु एवं कुटीर उद्योगो को बढ़ावा देना, उन्नत बीज एवं खाद उपलब्ध कराना, ऋण एवं सब्सिडी के माध्यम से उत्पादन संसाधन उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित है। कृषि विकास में भी शिक्षा की अहम भूमिका होती है जैसे कृषि विकास के क्षेत्र में कई कृषि विश्वविद्यालयों ने अहम भूमिका निभाई है। कृषि क्षेत्र में इनके समन्वित प्रयासों के फलस्वरूप ही आज हम खाद्यान उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर हो सके है। कृषि में शिक्षा के फलस्वरूप ही हमने उत्पादन को लक्ष्य मानकर अधिक उत्पादन की उन्नत तकनीक, उन्नत बीज, रासायनिक ऊर्वरक, पौध संरक्षण तकनीकी एवं सिंचाई की विधियां विकसित की है। और इन सभी तकनीको के प्रभाव से ही हमने उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। साथ ही समग्र ग्रामीण एवं कृषि विकास हेतु समय – समय पर किसानो को कृषि संबंधि उत्पादो, मशीनरी, अनुसंधान, उन्नत किस्मों तथा कृषि के साथ पशुपालन, मत्स्य पालन, रेशम पालन आदि की जानकारी भी दी जाती है। इस प्रकार यह सब शिक्षा के द्वारा ही संभव हो पाया है क्योंकि लोग शिक्षित होगें तो इन बातो से जागरूक होगें जिससे ग्रामीण और कृषि विकास को बढ़ावा मिलेगा।

मुख्यशब्द: शिक्षा की भूमिका, अशिक्षा सामाजिक, विधियां विकसित

1. प्रस्तावना
शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है जो जन्म से शुरू होती है। एक बच्चा माता पिता और अन्य भाई–बहनो से घिरा होता हैं और अपने परिवेश और प्रक्रियां का अध्ययन करता है। आसपास के भौतिक और सामाजिक वातावरण से वह जानकारी प्राप्त करता है और उससे कुछ सीखने की कोशिश करता है और प्रतिक्रियां करता है। ग्रामीण विकास आमतौर पर अपेक्षाकृत पृथक और कम आबादी वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगो के जीवन की गुणवत्ता और आर्थिक कल्याण में सुधार की प्रकियां को संदर्भित करता है। हालांकि, वैश्विक उत्पादन नेटवर्क में बदलाव और बढ़ते शहरीकरण ने ग्रामीण क्षेत्रों के चरित्र को बदल दिया है। इस प्रकार जब कृषि विकास की बात करे तो यह व्यापक रूप से माना जाता है कि पांरपरिक कृषि शिक्षा अब नहीं मिल रही है। आज विकासशील दुनिया को पहले से ज्यादा नए कृषि ज्ञान की जरूरत है। कृषि के क्षेत्र में बाजारो की प्रतिस्पर्धा, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनो तक पहुंच कम, जैव विविधता और नए कीटो एवं रोगो का फैलना आदि अनेक समस्याएं है। आजादी के बाद देश के कृषि परिदृश्य में भी काफी बदलाव आये है। चाहे वह उत्पादकता हो या फिर कृषि सम्बन्धित उच्च शिक्षण के अवसर। कृषि विकास की बात करे तो इसमें कृषि उत्पादकता बढ़ाना, लघु एवं कुटीर उद्योगो को बढ़ावा देना, उन्नत बीज एवं खाद उपलब्ध कराना, ऋण एवं सब्सिडी के माध्यम से उत्पादन संसाधन उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित है। और ये सभी उद्देश्य कृषि से शिक्षा को सम्बन्धि कर ही प्राप्त किये जा सकते है।

इसलिए सरकार द्वारा भी समय–समय पर कृषि विकास कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है जिसमें कृषि के बारे में विस्तृत बताया जाता है परन्तु इन सब बातो के लिए सबसे पहली जरूरत है लोगो में शिक्षा क्योंकि अगर लोग शिक्षित होंगे तो ही इन सारे महत्वो को समझ सकेंगे जिससे ग्रामीण और कृषि दोनो तरह का विकास होगा।

2. ग्रामीण विकास में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक और भौतिक विकास ही ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र एक दूसरे से अत्यन्त विशिष्ट है इस कारण वैश्विक स्तर पर ग्रामीण विकास दृष्टिकोणों की एक बड़ी विविधता है। ग्रामीण विकास क्रियाएं ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रो के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए होती है। वास्तव में कई विकसित देशो में ग्रामीण विकास कार्यक्रम बहुत सक्रिय है। इसमें सरकार ने भी कई प्रयास किये है जिनका उद्देश्य अविकसित गांवो का विकास करना है। ग्रामीण विकास में शिक्षा की अहम भूमिका होती हैं यह ग्रामीण विकास को नियंत्रित करती है एवं समस्याओं का निराकरण करती है। शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रो की जरूरतो का निदान करती है, उनके अधिकारो का दावा करती है, उनके जीवन को प्रभावित करने वाले फैसलो पर नियंत्रण रखती है, ग्रामीण क्षेत्रो में प्रशिक्षित जनशक्ति प्रदान करती है, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रो को जोडती हैं, रोजगार एवं आय के स्त्रोत प्रदान करती है। ग्रामीण विकास का उद्देश्य ग्रामीण लोगों की भागीदारी के साथ ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने के तरीको को खोजना है ताकि ग्रामीण क्षेत्रो की आवश्यकताओं को पुरा किया जा सके। विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम ग्रामीण विकास मे महत्वपूण भूमिका निभाते है। आपूर्ति, उत्पादन, विपणन, कार्मिक रखरखाव, शिक्षा, स्वास्थ्य, शासन की ग्रामीण प्रणालियों में शिक्षा की अहम भूमिका है। शिक्षा के कार्यो में सामाजिक परिवर्तन करना, व्यक्तिगत विकास, जीवन स्तर में सुधार, सांस्कृतिक विकास आदि सम्मिलित है। इस प्रकार जब शिक्षा से ग्रामीण विकास होगा तो गांवो में ही रोजगार के आवसर होंगे जिससे पलायन की समस्या भी नहीं होगी।

इस प्रकार ग्रामीण विकास के लिए समय – समय पर शिक्षा की विभिन्न योजनाएं एवं कार्यक्रम चलाएं गये जिनमें से कुछ निम्नानुसार है –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

इसका उद्देश्य शिक्षा में एकरूपता लाना, प्राथमिक शिक्षा एवं बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना है।

सर्व शिक्षा अभियान

2010 तक 6 से 14 वर्ष के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना।

शिक्षा का अधिकार

शिक्षा का अधिकार 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए एक मौलिक अधिकार हैं इनके लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान है। इस कारण अब भारत की साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है।

कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय – जुलाई 2004 से

मध्याह भोजन योजना – 15 अगस्त 1995 से

3. कृषि विकास में शिक्षा की भूमिका

कृषि विकास में भी शिक्षा की अहम भूमिका होती है जैसे कृषि विकास के क्षेत्र में कई कृषि विश्वविद्यालयों ने अहम भूमिका निभाई है। कृषि क्षेत्र में इनके समन्वित प्रयासों के फलस्वरूप ही आज हम खाद्यान उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर हो सके है। कृषि में शिक्षा के फलस्वरूप ही हमने उत्पादन को लक्ष्य मानकर अधिक उत्पादन की उन्नत तकनीक, उन्नत बीज, रासायनिक ऊर्वरक, पौध संरक्षण तकनीकी एवं सिंचाई की विधियां विकसित की है। कृषि विकास की बात करे तो इसमें कृषि उत्पादकता बढ़ाना, लघु एवं कुटीर उद्योगो को बढ़ावा देना, उन्नत बीज एवं खाद उपलब्द्ध कराना, ऋण एवं सब्सिडी के माध्यम से उत्पादन संसाधन उपलब्द्ध करान आदि सम्मिलित है। पांरपरिक कृषि शिक्षा अब नहीं मिल रही है, आज विकासशील दुनिया को पहले से ज्यादा नए कृषि ज्ञान की जरूरत है। कृषि के क्षेत्र में बाजारो की प्रतिस्पर्धा, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनो तक पहुंच कम, जैव विध्विधता और नए कीटो एवं रोगो का फैलना आदि अनेक समस्यां है। भारत एक कुषि प्रधान देश है यहां की 80 प्रतिशत आबादी कषि पर निर्भर हैं। वर्तमान में कृषि को चुनौतियो का सामना करना पडता है जैसे कम उत्पादकता, खेती में लाभप्रदता कम होना, गुणवत्ता प्रतिस्पर्दा, मशीनाकरण का निम्न स्तर, ग्रामीण क्षेत्रो में यातायात एवं शहर तक पहुंच का अभाव, कृषगत जानकारियों की कमी, प्राकृतिक घटनाएं आदि अनेक चुनौतियां है परन्तु यदि लागो शिक्षित है तो इनसे निपट सकेते हैं क्योंकि सरकार ने समय–समय पर कृषि विकास हेतु कई योजनाएं चलाई जाती है वे इनको समझ सकते है।

इस प्रकार कृषि संबंधी भी अनेक योजनाएं है जैसे कृषि विपणन, जैविक खेती योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, सिंचाई योजनाएं, बागवानी योजनएं, कृषि यंत्रिकरण और प्रौद्योगिकी योजनाएं, बीज, ऋण योजनाएं आदि। परन्तु इन सबके बारे में जानकारी हेतु व्यक्ति को जागरूक एवं शिक्षित होना अनिवार्य है। इसलिए कृषि विकास में भी शिक्षा की अहम भूमिका होती है।

4. उद्देश्य

शिक्षा ही ऐसी चीज है जो व्यक्ति का सर्वांगिण विकास कर सकती है अर्थात सामाजिक, आर्थिक, नैतिक आदि। शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण विकास एवं कृषि विकास संभव है। क्योंकि जब शिक्षा होगी तो ही व्यक्ति इन सब योजनाओ एवं कार्यक्रमों को समझ सकेगा जो ग्रामीण एवं कृषि विकास के लिए चलाई गयी है। शिक्षा समाज का दर्पण है, यह मनुष्य को अज्ञानता से आत्मज्ञान में बदल देता है। शिक्षा कृषि एवं ग्रामीण विकास दोनो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में आज भी लगभग आधे गाँवो की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति बेहद कमजोर है। इसलिए इस शिर्षक के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को बढ़ावा देनो है जिससे दूरस्त एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगो का सम्पूर्ण विकास हो सके चाहे वह कृषि संबंधित हो या अन्य जैस सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों की भागीदारी के साथ ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने के तरीको को खोजना है।

5. निष्कर्ष

इस प्रकार इस शिर्षक का विस्तृत अध्ययन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि शिक्षा सभी एक लिए आवश्यकू है चाहे वह शहर में रहता हो या गांव में। परन्तु फिर भी शिक्षा की ग्रामीण क्षेत्रो में अहम भूमिका होती है क्योंकि यह ग्रामीण विकास को नियंत्रित करती है एवं समस्याओं का निराकरण करती है तथा साथ ही कृषिगत विकास को भी बढ़ावा देती है।

6. सन्दर्भ

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर
2. इन्टरनेट एवं पत्र–पत्रिकाए